''संस्कार जागृति मिशन'' को समर्पित

!! ओ३म् !!

अंक–06 वर्ष–02, सितम्बर 2020 (मासिक)

एक कदम संस्कारों की ओर

संस्कार जागृति

मासिक डिजीटल (ऑन लाइन) पत्रिका

कोविड–19 (कोरोना) वायरस

बचाव ही उचित उपचार है

स्वयं की एवं दूसरों की रक्षा करें।

संस्कार जागृति

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

(भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रही संस्था 'संस्कार जागृति मिशन' को समर्पित डिजीटल पत्रिका)

अंक-06 वर्ष-02, संवत्सर 2077 सितम्बर 2020 (मासिक)

मार्गदर्शक
आचार्य सत्यप्रिय आर्य
डा0 अर्चना प्रिय आर्य

संपादक
विवेक प्रिय आर्य

सृष्टि संवत्
1960853121

कार्यालय
संस्कार जागृति मिशन
52, ताराधाम कॉलोनी
नियर पुष्पांजलि द्वारिका
टाउनशिप (मथुरा) उ.प्र.

दूरभाष
09719910557
09719601088
09058860992

अनुक्रमणिका

लेख-कविता	पृष्ठ संख्या
वेदवाणी	03
सम्पादकीय	04-05
मनुष्य द्विज बनता है, संस्कारों से	06-07
कवि की कलम से	08
प्रभु का प्यार हमें कहां प्राप्त हो सकता है?	09-10
संवेदनशीलता एक बहुत बड़ा गुण है	11
स्वास्थ्य चर्चा	12
युवाओं की शक्ति : ब्रम्हचर्य	13
संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां	14-15
विज्ञापन	16

'संस्कार जागृति' पत्रिका प्राप्त करने के लिए

अपनी ई-मेल आईडी व व्हाट्सएप नम्बर हमें भेजें........09719910557

वेद वाणी

प्रभो! तू हमारे हृदय-मन्दिर में रम जा, बस जा

वेद मंत्र

ओ३म् सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा। मर्यइव स्व आक्ये।।

-ऋ० १।९१।१३

ऋषिः-**राहूगणो गोतमः**।। देवता-**सोमः**।। छन्दः-**गायत्री**।।

विनय

हे देव! तुम मेरे हृदय में आ विराजो, इसी में रमण करो। कहने को तो पहले बहुत बार ऐसी प्रार्थना मैंने की है तथा औरों को करते सुना है, परन्तु शायद तब मैं न तो अपने हृदय को जानता था और न तुम्हें जानता था। तुम तो मुझमें तभी विराज सकते हो जब मेरा हृदय स्वार्थ से बिल्कुल शून्य हो, सर्वथा निर्मल हो। इसीलिए अब मैंने अपने जीवन के लिए भागीरथ-यत्न से हृदय को पवित्र किया है। मैंने झूठ, हिंसा, कुटिलता, असंयम आदि विकारों के मैल को ही नहीं निकाला है अपितु बड़े यत्न से क्षण-क्षण आत्मनिरीक्षण करते हुए राग और द्वेष के सूक्ष्मातिसूक्ष्म मल को भी खुरच-खुरचकर निकाला है और अतएव अब इसमें भक्ति-स्त्रोत भी खुल गया है, इसीलिए मैं अब तुम्हें बुलाने की हिम्मत करता हूं। हे मेरे जीवनसार! मैं कहता हूं कि तुम मेरे हृदय में ऐसे आ जाओ जैसे गौवें जौ के हरे खेत में प्रसन्नता से आकर खाने का आनन्द लेती हैं, क्योंकि मैंने भी न केवल अपने हृदय को तुम्हारे योग्य स्वच्छ बनाया है, किन्तु इसमें भक्ति का रस भी जुटा रखा है। मेरे इस हार्दिक प्रेम का रसास्वादन करने के लिए तुम यहां आओ। मेरा प्रेम देखता है कि अब तुम ही मेरे प्राणों के प्राण हो, तुम्हारा स्पर्श मेरा जीना है और तुम्हारा हट जाना मेरी मौत है। इसलिए मेरा हृदय पुकारता है कि तुम मुझमें आकर सदा रमण करो। क्या मेरा सच्चा ज्ञानमय प्रेम तुम्हें यहां नहीं खींच लायेगा? नहीं, मैं भूल करता हूं, तुम मेरे हृदय में न केवल आओ किन्तु आकर इस तरह बस जाओ जैसे मनुष्य अपने घर में रहता है व रमण करता है। मेरी भक्ति आर्त्त, जिज्ञासु व अर्थार्थी की भक्ति नहीं है, क्योंकि मैंने अपने हृदय से अब 'अहंकार' को भी सर्वथा निकाल दिया है। अब यह शरीर तेरा है, यह हृदय तेरा अपना घर है। 'मैं'-'मम्' सब यहां से लोप हो गया है। हे आत्मा-की-आत्मा सोम! सर्वथा विशुद्ध इस हृदय में आप यथेच्छा रमण करो, अब यह तुम्हारा घर हो गया है।

शब्दार्थ

गावः न यवसेषु- जैसे गौएं जौ के खेत में आकर रमण करती हैं, आनन्दित होती हैं और **मर्यः स्व ओक्ये इव**- जैसे मनुष्य अपने निजी घर में बसता है, वैसे ही **सोम**- हे सोम्यस्वरूप प्रभो! **त्वम्**- आप **नःहृदि**- हमारे हृदय में **आ**- आकर **रारन्धि**- सदा रमण करो व बस जाओ।

('आचार्य अभयदेव जी' की पुस्तक 'वैदिक विनय' से)

संस्कार जागृति मिशन

एक कदम संस्कारों की ओर

कार्यालय : 52, ताराधाम कॉलोनी, पुष्पांजलि द्वारिका के पास, पोस्ट-अडूकी, मथुरा (उ.प्र.) -281006

सम्पादकीय | नशा की गिरफ्त में दुनिया का सबसे युवा देश

विवेक प्रिय आर्य
(सम्पादक)

प्राचीनकाल से ही हमारे समाज में नशे को सदा बुराइयों का प्रतीक माना गया है। ड्रग्स एवं नशे की लत एक भयंकर बीमारी एवं बुराई है। इससे समाज और देश सब कुछ बर्बाद हो जाता है। ये बुराइयां जीवन में अंधेरा, बर्बादी तथा तबाही लाने का काम करती हैं। वर्तमान में दुनिया का सबसे युवा व इस समय जवानी से लबालब भरा हुआ देश भारत नशे की गिरफ्त में है। जिस युवा पीढ़ी के बल पर भारत विकास के पथ पर प्रगतिशील होने का दंभ भर रहा है, उस युवा पीढ़ी में नशे की सेंध लग रही है, जो दिन पे दिन युवा पीढ़ी में अपने पैर पसार रही है और युवा नशे की गिरफ्त में आ रहे है, जो अत्यंत ही चिंता का विषय है। युवाओं में नशा अब इस कदर हावी हो गया है कि नशा अब मौजमस्ती का नहीं अपितु आज की युवा पीढ़ी के लिए आवश्यकता बन गया है।

उदारीकरण के बाद प्रौद्योगिकी के विकास ने जहां एक ओर विकास के नए मार्ग खोले हैं, वहीं इंटरनेट माध्यम आज युवाओं को नशे के जाल में फंसाने एवं देश को अंधे कुएं में धकेलने वाले इस कारोबार को आगे बढ़ाने का बड़ा जरिया बन गया है। आज स्थिति यह है कि यह नशा का कारोबार गांवों तक अपने पैर जमा रहा है। वर्तमान समय में शराब, सिगरेट, गुटका, तम्बाकू, कोकीन, हेरोइन, गांजा, भांग, चरस, नशीली दवाइयाँ आदि का नशा युवाओं को तेजी से अपनी गिरफ्त में ले रहा है।

भारतीय राष्ट्रीय सर्वेक्षण की रिपोर्ट की माने तो भारत की आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा नशीली दवाइयों का सेवन ही नहीं करते है बल्कि इसके पूर्णतया आदी हो चुके है। आंकड़े बताते हैं कि कुछ सालों में शराब के साथ-साथ गांजा, अफीम और दूसरी नशीली चीजों के सेवन में काफी इजाफा हुआ है। अमीर से गरीब और बच्चे से बुजुर्ग तक इस लत के शिकार हो रहे हैं।

शराब कानूनी रूप से प्रचलित है तो गांजा-अफीम व ड्रग्स आदि प्रतिबंधित होने के बावजूद चलन में है। यह सच है कि शराब की बिक्री से सरकार को बड़े राजस्व की प्राप्ति होती है। मगर इस प्रकार की आय से क्या फायदा जिससे हमारा सामाजिक ढांचा क्षत-विक्षत हो रहा है और परिवार के परिवार खत्म होते जा रहे हैं। एक सर्वे के अनुसार भारत में गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले लगभग 37 प्रतिशत लोग नशे का सेवन करते हैं। इनमें ऐसे लोग भी शामिल है जिनके घरों में दो वक्त की रोटी भी सुलभ नहीं है। जिन परिवारों के पास रोटी-कपड़ा और मकान की सुविधा उपलब्ध नहीं है और सुबह-शाम के खाने के लाले पड़े हुए हैं उनके मुखिया मजदूरी के रूप में जो कमा कर लाते हैं उसे वे शराब पीने या अन्य नशे में फूंक डालते हैं। इन लोगों को अपने परिवार की चिंता नहीं है कि उनके पेट खाली हैं और बच्चे भूख से तड़फ रहे हैं। ऐसे लोगों की संख्या भी लगातार बढ़ती जा रही है। उनका कहना है कि वे गम को भुलाने के लिए नशे का सेवन करते हैं। उनका यह तर्क कितना बेमानी है जब यह देखा जाता है कि उनका परिवार भूखों मर रहा है। नशे के सेवन से मनुष्य के शरीर और बुद्धि के साथ-साथ आत्मा का भी नाश हो जाता है। नशेड़ी आदमी अनेक बीमारियों से ग्रसित हो जाता है।

भारत में नशे का कारोबार दिन पे दिन एक विकराल रूप धारण करता जा रहा है। इसका सेवन भारतीय युवाओं में तेजी से फैल रहा जिससे महिलाएं भी अछूती नहीं रही है। ....(शेष पेज 05 पर)

पेज 04 का शेष

सम्पादकीय : नशा की गिरफ्त में दुनिया का सबसे युवा देश

.....एक सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक भारत में नशीली दवाओं की तस्करी में पिछले तीन सालों में पांच गुना कि वृद्धि हुई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार तम्बाकू के प्रयोग के कारण दुनिया भर में 54 लाख लोग प्रति वर्ष अपनी जान गंवाते है, इनमें से 9 लाख मौते तो केवल भारत में ही होती है। प्रति दिन हमारे देश के 2500 व्यक्ति तम्बाकू की वजह से मृत्यु का शिकार होते हैं। वहीं शराब भी प्रतिवर्ष लाखों लोगों को मौत बनकर लील जाती है। नशा दीमक की तरह युवाओं की जवानी को चाट जाता है। देश में 65 प्रतिशत नशाखोरी से वे युवा ग्रस्त है, जिनकी उम्र 18 वर्ष से भी कम है। सरकारी आकड़ों के हिसाब से देश की 70 से 75 प्रतिशत आबादी किसी न किसी प्रकार का नशा करती है। जिसमें सिगरेट, शराब व गुटखा की ओर युवा सबसे ज्यादा आकर्षित हो रहे है और तीन में से एक युवा किसी न किसी प्रकार के नशे का आदी है। एक सर्वेक्षण के मुताबिक देश में हर रोज लगभग 5500 युवा तम्बाकू उत्पादों के सेवन करने वालों की श्रेणी में जुड़ रहे हैं। नशे के सेवन में महिलायें भी पीछे नहीं रह रही है। सिगरेट पीने के मामले में भारत की लड़कियां और औरतें अमेरिका के बाद पूरी दुनिया में दूसरे नंबर पर हैं।

आजादी के बाद देश में नशे की लत तेजी से बढ़ी है। हम विनाश की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। देश में शराब व नशा बंदी के लिए कई बार आंदोलन हुए, मगर सामाजिक, राजनीतिक चेतना के अभाव में इसे सफलता नहीं मिली। सरकार को अपने राजस्व के लालच को छोड़कर नशे के खिलाफ गंभीर कदम उठाने चाहिए, तभी समाज और देश मजबूत होगा।

लगाते लेट पी-पीकर के गंदी नालियां में, डुबाते क्यों जवानी को नशे की नालियों में,
अरे अच्छी नहीं है बशर के लिए..........

!! ओ३म् !!

एक कदम संस्कारों की ओर
संस्कार जागृति
मासिक डिजीटल (ऑन लाइन) पत्रिका
(भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रही संस्था 'संस्कार जागृति मिशन' को समर्पित डिजीटल पत्रिका)

'संस्कार जागृति' पत्रिका प्राप्त करने के लिए अपनी ई-मेल आईडी व अपना व्हाट्सएप नम्बर हमें 09719910557 नम्बर पर भेजें।

आपके विचार व सुझाव आमंत्रित हैं

प्रिय साथियों आप भी अपने सुझाव, विचार, लेख, कविता, स्वास्थ्य चर्चा हमें भेज सकते हैं, जिन्हें हम अपने अगले अंक में प्रकाशित कर सकें। हमें आपकी प्रतीक्षा रहेगी। E-Mail : sanskarjagratimission@gmail.com 09719910557

मनुज द्विज बनता है, संस्कारों से

लेखिका : डा. अर्चना प्रिय आर्य, अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

डा० अर्चना प्रिय आर्य
एम.ए. (संस्कृत/हिंदी)
बी.एड., पीएच.डी.

मनुष्य जब जन्म लेता है तो जन्म-जन्मान्तरों के अनेक कयाश-कल्मश अपने साथ लाता है। उनका परमार्जन परिष्कार आवश्यक होता है। यदि उन्हें यों ही छोड दिया जाए तो वे आगे चलकर चित्र-विचित्र कल्पनाएं अपरिष्कृत चिन्तन, तन्त्र विलक्षण मनोवृत्तियों का एक मिला जुला मानवी स्वरुप निर्धारित करते हैं। ऐसी स्थिति में चिन्तन और क्रिया में योग्यता, बुद्धि, रुचि और लक्ष्य में एक रुप न होने के कारण उसके जीवन की कोई एक निश्चित दिशा निर्धारित नहीं हो पाती है। डाक्टर जानते हैं कि रक्त में जब विजातीय द्रव्य, जीवाणु-विषाणु प्रवेश करते हैं तो वे रोगों को जन्म देते हैं। ओझा तान्त्रिकों की मान्यता है कि जब किसी बाहरी सत्ता का हस्तक्षेप होता है तो व्यक्ति उन्मादग्रस्त बनकर औधें सीधे कार्य करने लगता है। विपरीत विचारधारा के व्यक्ति से घर में कलह उत्पन्न होता, वैमनस्य बढता और उससे पूरा परिवार प्रभावित होकर अवगति की राह पर आ जाता है।

संचित कशाय-कल्मश मनुष्य की ऐसी ही गति बनाते हैं। इन्हीं से उबारने और आत्मिक प्रगति के पथ की ओर अग्रसर करने के लिए ऋषियों ने 'संस्कार पद्धति' की व्यवस्था की थी। इसे देव संस्कृति की सबसे बडी विशेषता मानी जानी चाहिए क्योंकि इसमें जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवनपर्यन्त व्यक्तित्व को सफल सार्थक बनाने हेतु सतत् शोधन एवं आत्मसत्ता के अभिवर्धन का शिक्षण प्रणाली का अंग रही है। संस्कृति के अन्तर्गत जीवन क्रम में इन्हें इस प्रकार समाविष्ट कर दिया गया कि यथा सम्भव वांछित श्रेष्ठ संस्कार व्यक्ति को स्वयमेव मिलते रहें। पशु यह नहीं जानते कि उनकी मर्यादाएं क्या हैं? कैसे खाना-पीना और जीवन यापन करना हैं? उनका यह सारा क्रिया व्यापार प्रकृति प्रेरणा से चलता है किन्तु मनुष्य को इस बात की भली-भांत जानकारी होती है कि वह अपना आत्म विकास कैसे करे? कैसे योजनाएं बनाये और कार्यक्रम अपनाए कि अन्ततः वह उस मार्ग पर चलते-चलते परम लक्ष्य को प्राप्त करे। इस दिशा में अडचन एक ही आती है वह है-कुसंस्कार। वही मार्ग में बाधक बनकर उद्देश्य की ओर बढते व्यक्ति को चित कर देते हैं। इनके रहते उससे वैसा कुछ करते नहीं बन पडता जो उसे सुसंस्कृत, सुविकसित बना सके। यह बात नहीं कि सुसंस्कारिता के बीज किसी-किसी में ही होते हैं। यह न्यूनाधिक होते तो सभी में हैं पर कुसंस्कारिता झाड-झंखाड से इस प्रकार दबे रहते हैं कि उन्हें पनपने का मौका ही नहीं मिल जाता। यह उभयपक्षीय प्रयोजन संस्कार पद्धति पूरा करती है। भारतीय संस्कृति की आदिकाल से यह विशेषता रही है कि उसमें उद्देश्यपूर्ण आदर्शयुक्त, परमार्थिक, जीवन को ही प्रमुखता दी गयी है। इस देश में उस व्यक्ति को ही सच्चा मनुष्य माना जाता रहा है जो संस्कारवान आदर्श जीवन जीता रहा है। अज्ञान, अशक्ति, अभाव, कषाय-कल्मष से संघर्ष करने का व्रत लेने वाले ही द्विज कहे जाते हैं। जो द्विज नहीं हैं अर्थात् जिनमें संघर्ष क्षमता क्षीण हो चुकी है वे आजीवन शूद्र बने रहते हैं। ऐसे स्वार्थी, लोभी, विषयी, विकारी मनुष्य का अर्ध-सामाजिक बहिष्कार किया जाता रहा है। वस्तुतः जन्म से भी शूद्र होते हैं पर बाद में सूक्ष्म आध्यात्मिक उपचारों द्वारा संस्कारित होकर अपनी चिन्तन-चेतना को परिष्कृत कर वे द्विजत्व की प्राप्ति करते हैं।

परमात्मा ने किसी भी प्राणी को पूर्ण नहीं बनया। अपूर्णता की कमी को अनुभव करते हुए वह पूर्ण बनने का प्रयत्न करता है। यहीं उसके जीवन का उद्देश्य होता है, अन्य प्राणियों की अपेक्षा जहां मनुष्य में अधिक गुण हैं वहां उसमें कमियां भी हैं। पशु उनसे बढे-चढे हैं। पशु का बालक जन्म लेते ही उछलने-कूदने लगता है। उसे खडे होना, चलना, दूध पीना, माता को पहचानना आदि बातें.. (शेष पेज 07 पर)

पेज 06 का शेष

''मनुष्य द्विज बनता है, संस्कारों से'' (लेखिका : डा. अर्चना प्रिय आर्य)

.....सिखायी नहीं जाती वरन् वह स्वयं सीख जाते हैं। मनुष्य के बालक के साथ यह बात नहीं है। बिना सहायता के वह आगे नहीं बढ सकता है। उसे प्रत्येक कार्य की शिक्षा दी जाती है। यदि उसे सांसारिक कार्यों की शिक्षा न दी जावे तो वह पशु से भी अधिक विकसित न होगा। उसे सहायता की आवश्यकता पडती है। इस सन्दर्भ में मूर्धन्य मनीषियों का कहना कि गर्भावस्था में आने से लेकर मृत्यु पर्यन्त मनुष्य को अनेकानेक वातावरण में परिवेष्ठित ही रहना पडता है। गर्भकाल में वह अपनी अनुवांशिकता से अवेष्टित होता है और उस समय जन्मदात्री मां के शारीरिक मानसिक स्वास्थ एवं भाव संवेदनाओं का उस पर प्रगाढ असर पडता है। किन्तु इस दुनिया में पदार्पण करते ही उसे जो प्रथम वातावरण मिलता है वह उसका पारिवारिक परिवेश होता है। यह एक ऐसा वातावरण है जहां शिशु के व्यक्तित्व की गलाई-ढलाई होती एवं इसकी नींव रखी जाती है, जिस पर कलान्तर में सुदृढ व्यक्तित्व का महत्व खडा किया जाता है। वैज्ञानिक अनुसन्धानों से भी अब यह स्पष्ट है हो गया है कि बच्चों को आनुवांशिकी से अधिक वातावरण, पारिवारिक परिवेश एवं परिस्थितियां प्रभावित करती हैं। शिशुओं के समग्र मानसिक विकास के लिए पारिवारिक शान्ति, सौहार्द और स्नेह-दुलार के साथ-साथ संस्कारोन्मुख प्रशिक्षण की व्यवस्था का होना भी नितान्त आवश्यक है।

ततत्ववेत्ताओं, समाजशास्त्रियों एवं चिकित्सा-विज्ञानियों ने इस सन्दर्भ में गम्भीरतापूर्वक अध्ययन अनुसन्धान किया है। उनके अनुसार मनुष्य का विकास ज्ञान वृद्धि प्रशिक्षण, अभ्यास एवं संस्कार के अभाव में स्वाभाविक ढंग से नहीं हो पाती। इसके लिए जहां एक ओर माता-पिता या अभिभावक और शिक्षक आवश्यक है, वहीं दूसरी ओर तद्नुरुप उपयुक्त वातावरण का होना भी जरुरी है। बेबिलोन के सुप्रसिद्ध राजा असुर वानापाल फ्रेडरिक द्वितीय, जेम्स चतुर्थ और अकबर के समय में कुछ बच्चों पर इस तरह के प्रयोग किये गये थे जिनमें उन्हें मानव समाज से इस तरह अलग रखा गया था कि उनका सम्पर्क किसी भी व्यक्ति से न हो सके। न तो वे किसी बात सुन सकें और न उनके क्रिया कलापों को देख सकें। केवल कुछ महिलाऐं ही उनके पालन-पोषण करती रहीं। निश्चित अवधि के पश्चात वे भी उनसे दूर हट जातीं और वहीं से उनका निरीक्षण करती रहती थीं। उन सभी प्रयोग परीक्षणों से एक ही निष्कर्ष निकला था कि प्रशिक्षण एवं ज्ञान वृद्धि के अभाव में सभी बच्चे अविकसित, गूंगे, बहरे एवं व्यक्तित्व की दृष्टि से सर्वथा गये गुजरे थे। बगीचे में सुन्दर वृक्ष सुशोभित करने करने के लिए माली को उसकी बडी देख-भाल करनी पडती है। खाद, पानी, गुडाई, नराई, कांट-छांट कलम आदि अनेक प्रक्रियाओं के द्वारा ही वह पौधे को मनचाहे रुप में बना सकने में समर्थ होता है। जहां इस प्रकार के संस्कार करने वाला माली नहीं होता वहां पौधे कुरुप अस्त-व्यस्त और विकृत परिस्थिति में पडे रहते हैं। यह बात मनुष्य के बालकों पर और भी अधिक लागू होती है। पशुओं के बालक तो जन्म से ही खडे होना, चलना, दूध पीना, माता को पहचानना, बोलना आदि बातें सीखे होते हैं पर मनुष्य के बालक को दूसरों की सहायता से बहुत समय में यह सब बातें धीरे-धीरे सीखनी होती हैं। इस प्रकार का शिक्षण उसे प्राप्त न हो तो वह सर्वथा अविकसित ही रह जाता है। एक बार एक मादा भेडिया मनुष्य के बालक को उठा ले गयी। उसने उसे खाया नहीं वरन् अपना दूध पिलाकर पाल लिया। इस प्रकार पला हुआ आठ वर्ष का बालक जब शिकारियों द्वारा पकडा गया तो वह भेडिया जैसा ही चलता, बोलता, खाता एवं सोचता था। कहने का तात्पर्य यह कि मनुष्य अपने मानसिक विकास में तब तक सफल और समर्थ नहीं होता जब तक कि उसे किसी दूसरे की बौद्धिक सहायता न मिले। यह सहायता ही वह आधार है जिसके द्वारा कोई मनुष्य भला-बुरा, छुद्र एवं महान बनता है।.. (शेष अगले माह के अंक में)

अनुरोध : 'संस्कार जागृति मिशन' का पावन उद्देश्य अनवरत जन-जन तक पहुंच सके इसके लिए आइये हम सब इस पवित्र कार्य में तन-मन-धन से समर्पित होएं। आपसे अनुरोध है कि संस्था के बैंक खाता संख्या 50200046951381, एच.डी.एफ.सी. बैंक में सहयोग राशि जमा की जा सकती है। अन्य जानकारी के सम्पर्क करें : 09719910557, 9719601088।

कवि की कलम से

शंकर की कविताएं

रचियता : महाकवि नाथूराम शर्मा 'शंकर', हरदुआगंज (अलीगढ़)

पछतावा

रस चाट चुका लघु जीवन का,
पर लालच हा न मिटा मन का।

गत शैशव उद्धत ऊल गया,
उमगा नव यौवन फूल गया।
उपजाय जरा तन झूल गया,
अटका लटका सटकापन का।।

कुल में सविलास विहार किये,
अनुकूल घने परिवार किये।
विधि के विपरीत विचार किये,
धर ध्यान वधू-वसुधा-धन का।।

पिछले अपराध पछाड़ रहे,
अब के अघ, दोष दहाड़ रहे।
उर दु:ख अनागत फाड़ रहे,
भभका भय शोक-हुताशन का।।

रच ढ़ोंग प्रपंच पसार चुका,
सब ठौर फिरा झख मार चुका।
शठ 'शंकर' साहस हार चुका,
अब तो रट नाम निरंजन का।।

अर्थाभिमानी

तेरे अस्थिर हैं सब ठाठ,
इन पर क्यों घमण्ड करता है।

भिक्षुक और मेदिनीनाथ,
भव तज भागे रीते हाथ।
क्या कुछ गया किसी के साथ,
तो भी तू न ध्यान धरता है।।

उतरी लड़काई की भंग,
टूटा तरूणाई का तंग।
जमने लगा जरा का रंग,
भूला नेक नहीं डरता है।।

होगा मरण-काल का योग,
तुझ से छूटेंगे सुख-भोग।
आकर पूछेंगे पुर-जोर,
अब क्यों अभिमानी मरता है।।

प्यारे चेत प्रमाद विसार,
कर ले औरों का उपकार।
'शंकर'-स्वामी को उर धार,
यों सद्‌भक्त जीव तरता है।।

नरक-निर्देशन

हम सब एक पिता के पूत
हा! विशाल मानव-मण्डल में, उपजे उद्धत ऊत।
मान लिये इन मतवालों ने, भिन्न-भिन्न मत-भूत।।

प्रभुता पाय दहाड़ रहे हैं, सबल रूद्र के दूत।
पिण्डी पड़ी कुटिल कुनीति की, रोष-भरी करतूत।।

सामाजिक बल को लग बैठी, छल की छूत अछूत।
जल कर जाति-पांति ने तोड़ा, सुख-साधन का सूत।।

भड़क रही तीनों नरकों में, अड़ की आग अकूत,
'शंकर' कौन बुझावे इस को, बिन विवेक-जीमूत।।

महाकवि श्री नाथूराम शर्मा शंकर की सत्य प्रकाशन, मथुरा से प्रकाशित
'शंकर - सर्वस्व' पुस्तक से

गतांक से आगे

प्रभु का प्यार हमें कहां प्राप्त हो सकता है?

लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य, संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन

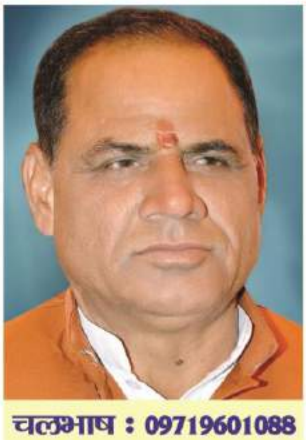

चलभाष : 09719601088

......भगवान के दर्शन प्रत्येक आस्तिक करना चाहता है किन्तु वस्तुतः सत्य तो यह है कि हम सब भगवान के दर्शन से डरते हैं। डर हमें यह लगता है कि कहीं भगवान हमसे यह पूछ न बैठे कि तू नाम तो मेरा लेता है और प्यार तुझे शैतान से है। तू पापी क्यों है? भाई-भाई से लड़ता क्यों है? झूठ का व्यापार करता है, धंधा छोड़ना नहीं चाहता, फिर मुझे क्यों पुकारता है? दिल तेरा और कहीं है और हाठों से केवल मेरा नाम जपता है। याद रखना तुम दुनियां को धोखा दे सकते हो, पर न अपने को धोखा दे सकते हो और न प्रभु को। प्रभु तुमसे यह भी पूछेगा कि तुम मुझे क्यों बुला रहे हो, क्या चाहते हो? इसके उत्तर में तुम्हारे पास क्या है? तुम कहीं यह मांगना तो नहीं चाहते कि तुम्हारी दुकान तो चल जाये पर पड़ौसी की दुकान में घाटा हो जाये और उसकी दुकान बंद हो जाये। प्रभु हंसेगा कि तुम स्वार्थ की ऐसी बातें कर रहे हो, जिसमें ईर्ष्या, द्वेष और बेर की भावना है। इसलिए मैं कहा करता हूं कि लोग ईश्वर से डरते हैं, झूठ-मूठ उसका नाम लेते हैं। हम पापी हैं और पाप का यह डर हमारे सिर पर सवार रहेगा। जिसमें बुरी आदतें पड़ जाती हैं। वह तो माता-पिता और गुरू के सामने जाने से डरता है, वह इनसे दूर कतराता फिरता है। यही हमारा हाल है।

ईश्वर का दर्शन हम विचित्र तरह करना चाहते हैं। हम उसे आंखों से देखना चाहते हैं और उसकी आवाज अपने कानों से सुनना चाहते हैं। लेकिन उपनिषद् का ऋषि कहता है कि आंख वहां तक जाती ही नहीं। तुम यह निश्चय समझ लेना कि जिस किसी चीज को तुम आंखों से देख लोगे, तो वह निश्चय पूर्वक चाहे कुछ भी हो परन्तु ईश्वर नहीं हो सकती। युक्ति स्पष्ट है- क्योंकि हमने आंखों से देखा, इसलिए अमुक वस्तु ईश्वर नहीं है, ईश्वर की चित्रकारी, ईश्वर की कारीगरी तो हो सकती है पर ईश्वर नहीं। ईश्वर न इन बाहरी आंखों से देखा जा सकता है और न इन बाहरी कानों से सुना जा सकता है। उसके दर्शन के लिए हमें भीतर की आंखें खोलनी होंगी और उसके शब्दों को सुनने के लिए अपने अन्तःकरण के कान खोलने होंगे।

याद रखना कि जितनी चीजों को हम आंखों के लंसों से देखते या कानों के गोलकों से सुनते हैं वे तो बड़ी थोथी चीजे हैं। हमारे शरीर में अन्नमय कोष से ज्यादा महत्व का प्राणमय कोष और मनोमय कोष है, इसी को किसी ने आंखों से नहीं देखा। न तुमने आज तक मुझे देखा, न मैंने आज तक तुम्हें देखा- जो कुछ मैंने देखा है वह तुम्हारे शरीर के वस्त्र हैं। तुम्हारी शरीर की चमड़ी और उसका अस्थि पिंज्जर भी तो एक प्रकार की सन्दुकची है, जिसके भीतर बहुत छोटी सी गुफा में तुम बैठे हुए हो। जब हम और आप एक दूसरे को आंखों से नहीं देख सकते, तो भला ईश्वर को इन आंखों से कैसे देखोगे? मूर्खता की बात होगी यदि कोई कहे कि हम तुम्हें ईश्वर दिखा सकते हैं। पर यह याद रखना कि ईश्वर तो बिल्कुल हमारे पास है, जहां हम है, वहीं वह है। थोड़ी देर यह पता तो लगाओ कि तुम कहां हो, वहीं अपने प्यारे ईश्वर को ढूंढना। हम जाने या न जाने, ईश्वर के पास हम कई बार जाते हैं।

सांख्य दर्शन के आचार्य कपिल मुनि कहते हैं कि सुषुप्ति, समाधि और मोक्ष की अवस्था में हमें परमात्मा से भेंट होती है। दुनियां में सुषुप्ति से बढ़कर कोई अवस्था नहीं। गहरी नींद सोने का नाम सुषुप्ति है, पर ऐसी गहरी नींद हो कि उसमें सपना भी न दिखाई दे और न उसमें कोई वासना या कामना हो, केवल बेसुधी हो। ऐसी सुषुप्ती में प्रभु बड़े प्यार से हमें अपनी गोद में उठा लेता है, हमारी सारी थकावट मिट जाती है। जब जगते हैं तो कहते हैं कि बड़े आनन्द से सोये। यह आनन्द कहां से आया? यह थकावट कैसे मिटी?......................(शेष पेज 10 पर)

पेज 09 का शेष

प्रभु का प्यार हमें कहां प्राप्त हो सकता है? (लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य)

.....प्रभू की गोद का ही यह प्रसाद था, इस बात को मत भूलना। पर तुम्हें तो याद भी नहीं है, तुम सो रहे थे, प्रभु बड़े प्यार से तुम्हारी थकावट मिटा रहा था। योग की समाधि में तुम्हें प्रभु के साक्षात दर्शन होते हैं। उस दर्शन के समय तुम जागते होते हो। प्रभु के साक्षात्कार से तुम्हारे हृदय के मैल भी घुल जाते हैं। सुषुप्ति में तो केवल शारीरिक थकावट ही मिटी थी पर समाधि से जब लौटते हो तो पवित्र होकर लौटते हो। प्रभु दर्शन का वह सबसे बडा प्रसाद है।

यह भी स्मरण रखना चाहिए कि मनुष्य तुच्छ तपस्या और साधारण प्रयास करता है, प्रभु का प्यार पाने के लिए और मनुष्य के द्वारा असाधारण कार्यों का सम्पन्न होना सम्भव हो जाता है। हम अपने लिए थोड़ा सा करते हैं परन्तु परमात्मा हमारे लिए बहुत कुछ करता है परन्तु थोड़ा सा काम हमसे करवा लेता है। उदाहण के तौर पर- तुम्हारे घर पर आम का पेड़ है। तुम अपने को उसका मालिक समझते हो। क्योंकि तुम्हारी जमीन है और तुमने उसे उगाया है। पर यह भूल जाओ कि धरती तुम्हारी है, तुमने केवल इतना ही किया कि थोडी सी मिट्टी खोदी उसमें कुछ खाद डाल दी और बीज को मिट्टी के अन्दर छिपा दिया (वह बीज जिसे तुमने नहीं बनाया)। कुछ पानी दिया और कभी-कभी थोडी सी रखवाली कर ली, बस इतना ही तो तुमने किया। इस बात को क्यों भूल जाते हो कि धरती में जब तुमने बीज छिपा दिया था तो कौन उस बीज में बैठा हुआ एक छोटा सा अंकुर निकाल देता है? कौन उस अंकुर को पालता-पोषता है? उसे बड़ा करता है, उससे पत्ते निकलते हैं, पेड़ बनता है, फूल आते हैं, फूल में से फल निकलना प्रारम्भ हो जाता है। यह है प्रभु की जादूगरी और चमत्कार (इस चमत्कार के आगे समस्त बाबाओं और पैगम्बरों के छल-कपट से भरे चमत्कार फीके हैं)। तुमने तो बीज बौने का थोड़ा सा पुरूषार्थ किया, बाकी तो सारा काम प्रभु का है। तुमने रात को कुछ रोटी खायी, कुछ दूध पीया। तुमने थोड़ा सा ही काम किया मुंह खोला और हाथ उठाकर खाने को पेट के भीतर की ओर खिसका दिया। खा पी कर तुम सो गये। तुम्हें तो पता भी नहीं होता कि कौन सा रसोइया तुम्हारी रोटी के टुकड़े से क्या-क्या तैयार करता है? प्रभु की व्यवस्था तुम्हारी रोटी को पीस-पास करके अनगिनत पदार्थ बनाती है। जो रूधिर भोजन का कुछ अंश आंखों की पुतली में पहुंचता है। शरीर के जिस अंग को जिस द्रव्य की जितनी आवश्यकता है, प्रभु चुपके से वहां पहुंचा देता है। तुम तो सोते रहे, तुम्हें तो पता भी न चला कब क्या बना और कैसे कहां पहुंच गया? इसलिए मैं कहा करता हूं कि आदमी तो अपने लिए बहुत काम करता है। प्रभु उससे थोड़ा सा करवा तो लेता है पर बाद में वह स्वयं इस कार्य को सम्पन्न करता है। प्रभु की इस व्यवस्था में जिसे विश्वास नहीं वह तो मारा-मारा भटकता फिरता है। अकेले प्रभु पर विश्वास रखो, बाकी सब भरोसे झूठे हैं।

''एतद् आलम्बनं श्रेष्ठं एतद् आलम्बनं परम्''

अर्थात् प्रभु के आलम्बन से बढ़कर कोई और आलम्बन नहीं। प्रभु का आलम्बन छोड़ दिया तो दर-दर के भिखारी बनोगे। बाबाओं, देवियों, माताओं और भगवानों के चक्कर में फंसोगे। आजकल भारतवर्ष में भगवानों की कमी नहीं है, इनके आगे पुराने भगवानों को भी भूल गये। श्रीराम और श्रीकृष्ण, ईसा और मुहम्मद भी पुराने पड़ गये। ये भगवान, ये आचार्य, ये योगेश्वर कहते हैं कि नये युग में अब पुराने भगवानों से काम नहीं चलेगा, पुराने भगवान अपने समय में बड़े रहे होंगे पर अब तो हम में दिव्य शक्ति है, हमारे चमत्कारों को देखो। तुम्हारा कल्याण हम से होगा। हाड़-मांस, मिट्टी के बने भगवानों के पीछे दुनियां पागल है, इससे बढ़कर नास्तिकता क्या होगी? ....(शेष अगले माह के अंक में)

संस्कार वाणी : हर इंसान के अंदर कोई न कोई शक्ति जरूर होत है। हमें बस उस शक्ति को अपने अंदर जाग्रत करना है। - आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी (संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन)

प्रेरक प्रसंग

संवेदनशीलता एक बहुत बड़ा मानवीय गुण है

वंदना प्रिय आर्य
एम.ए., एम.फिल. (संस्कृत)
उपाध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

प्रमोद काका डाक विभाग के कर्मचारी थे और बहुत दिनों से मथुरा के आसपास के गाँव में चिट्ठियां बांटने का काम करते थे। एक दिन उन्हें एक चिट्ठी मिली, पता मथुरा के करीब का ही था लेकिन आज से पहले उन्होंने उस पते पर कोई चिट्ठी नहीं पहुंचाई थी। रोज की तरह आज भी उन्होंने अपना थैला उठाया और चिट्ठियां बांटने निकला पड़े। सारी चिट्ठियां बांटने के बाद वे उस नए पते की ओर बढ़ने लगे। दरवाजे पर पहुँच कर उन्होंने आवाज दी तो अन्दर से किसी लड़की की आवाज आई और बोली काका, वहीं दरवाजे के नीचे से चिट्ठी डाल दीजिये। डाकिया प्रमोद सोचने लगा कि अजीब लड़की है मैं इतनी दूर से चिट्ठी लेकर आ सकता हूँ और ये महारानी दरवाजे तक भी नहीं निकल सकतीं। काका ने मन ही मन सोचा और खीजते हुए बोले बहार आइये! रजिस्ट्री आई है, हस्ताक्षर करने पर ही मिलेगी। अन्दर से आवाज आई काका अभी आई। काका इंतजार करने लगे, पर जब 2 मिनट बाद भी कोई नहीं आयी तो उनके सब्र का बाँध टूटने लगा और फिर बोले यही काम नहीं है मेरे पास, जल्दी करिए और भी चिट्ठियां पहुंचानी है और ऐसा कह कर काका दरवाजा पीटने लगे। कुछ देर बाद दरवाजा खुला। सामने का दृश्य देख कर काका चौंक गए। एक 12-13 साल की लड़की थी जिसके दोनों पैर कटे हुए थे। उन्हें अपनी अधीरता पर शर्मिंदगी हो रही थी। लड़की बोली क्षमा कीजियेगा मैंने आने में देर लगा दी, बताइए हस्ताक्षर कहाँ करने हैं? काका ने हस्ताक्षर कराये और वहां से चले गए। इस घटना के आठ-दस दिन बाद काका को फिर उसी पते की चिट्ठी मिली। इस बार भी सब जगह चिट्ठियां पहुँचाने के बाद वे उस घर के सामने पहुंचे और आवाज दी चिट्ठी आई है, हस्ताक्षर की भी जरूरत नहीं है, नीचे से डाल दूँ। अन्दर से लड़की चिल्लाई नहीं-नहीं, रुकिए मैं अभी आई। कुछ देर बाद दरवाजा खुला। लड़की के हाथ में गिफ्ट पैकिंग किया हुआ एक डिब्बा था। काका लाइए मेरी चिट्ठी और लीजिये अपना तोहफा, लड़की मुस्कुराते हुए बोली। काका संकोचवश उपहार लेते हुए बोले इसकी क्या जरूरत है बेटा। लड़की बोली बस ऐसे ही काका, आप इसे ले जाइए और घर जा कर ही खोलियेगा। काका डिब्बा लेकर घर की और बढ़ चले, उन्हें समझ नहीं आर रहा था कि डिब्बे में क्या होगा? घर पहुँचते ही उन्होंने डिब्बा खोला और तोहफा देखते ही उनकी आँखों से आंसू टपकने लगे। डिब्बे में एक जोड़ी चप्पलें थीं। काका बरसों से नंगे पाँव ही चिट्ठियां बांटा करते थे लेकिन आज तक किसी ने इस ओर ध्यान नहीं दिया था। ये उनके जीवन का सबसे कीमती तोहफा था। काका चप्पलें कलेजे से लगा कर रोने लगे। उनके मन में बार-बार एक ही विचार आ रहा था कि बच्ची ने उन्हें चप्पलें तो दे दीं पर वे उसे पैर कहाँ से लाकर देंगे?

पाठको, संवेदनशीलता एक बहुत बड़ा मानवीय गुण है। दूसरों के दुखों को महसूस करना और उसे कम करने का प्रयास करना एक महान काम है। जिस बच्ची के खुद के पैर न हों उसकी दूसरों के पैरों के प्रति संवेदनशीलता हमें एक बहुत बड़ा सन्देश देती है। आइये हम भी अपने समाज, अपने आस-पड़ोस, अपने यार-मित्रों-अजनबियों सभी के प्रति संवेदनशील बनें। आइये हम भी किसी के नंगे पाँव की चप्पलें बनें और दुःख से भरी इस दुनिया में कुछ खुशियाँ फैलाएं।

आइये, मातृभाषा का सम्मान बढ़ाते हुए दुनियाभर में
हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय भागीदारी निभाएं।

हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

स्वास्थ्य चर्चा

अनेक बीमारियों से बचाता है 'प्याज'

नीति प्रिय आर्य

प्याज का इस्तेमाल हर घर में किसी न किसी रूप में होता है। इससे दाल में तड़का भी लगाया जाता है। ज्यादातर लोग भोजन के साथ कच्चा प्याज सलाद के रूप में खाते हैं। प्याज प्राचीन काल से उपचारात्मक लाभों के लिए जाने जाते हैं। प्याज का वैज्ञानिक नाम 'एलियम सेपा' है। सब्जियों का स्वाद बढ़ाने वाला प्याज, केवल स्वाद ही नहीं बल्कि आपके स्वास्थ्य में भी वृद्धि करता है। इतना ही नहीं यह प्याज सेहत के साथ आपके सौंदर्य को भी बढ़ाने में सहायक होता है। प्याज की तासीर ठंडी होती है। इसका गर्मियों के मौसम में अधिक व्यंजनों में इस्तेमाल किया जाता है। पर प्याज का अधिक मात्रा में सेवन करना भी नुकसानदायक हो सकता है। इसलिए नियमित रूप से ही इसका सेवन करें। प्याज में एंटी ऑक्सीडेंट तत्व मौजूद होते हैं जो गर्मी में शरीर को लड़ने की ताकत देते हैं। प्याज में भरपूर मात्रा में विटामिन ए, बी6, बी-कॉम्प्लेक्स और सी भी पाया जाता है। प्याज में आयरन, फोलेट और पोटैशियम जैसे खनिज भी पर्याप्त मात्रा में होते हैं। वैसे प्याज की गंध अच्छी नहीं होती, पर यह बहुत ही गुणकारी है। नियमित रूप से प्याज का इस्तेमाल करने पर कई तरह की बीमारियों से बचाव तो होता ही है, यह शरीर की रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता को भी बढ़ाता है। आइये जानते हैं प्याज से होने वाले लाभ के बारे में -

प्याज से होने वाले लाभ :-

1. अपच की समस्या से अधिकतर लोग परेशान रहते हैं। अगर आपको भी यह समस्या परेशान करती है, तो आप भी प्याज का सेवन जरूर करें। प्याज के सेवन से शरीर में पाचक रस का प्रवाह ज्यादा होता है जो खाने को पचाने में सहायक होता है।
2. सांस संबंधी रोग होने पर प्याज काफी लाभदायक है, इसके अलावा गठिया के इलाज में भी प्याज का उपयोग किया जाता है। गर्मी के दिनों में प्याज रोज खाने से लू लगने का खतरा नहीं होता।
3. शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए प्याज बहुत फायदेमंद है। यह न केवल कई तरह की बीमारियों से आपको बचाता है, बल्कि सब्जियों में पकाने के दौरान इस्तेमाल होने के कारण विटामिन-सी के रूप में भी यह फायदेमंद होता है।
4. डाइबिटीज से पीड़ित लोगों के लिए प्याज बहुत काम की चीज है। यह शरीर में इंसुलिन की मात्रा को बढ़ाने के साथ ही रक्त में शर्करा या शुगर के स्तर को नियंत्रित करता है। इससे डाइबिटीज मरीजों को लाभ होता है।
5. वजन घटाने के लिए अगर आपकी कोशिश बरकरार है, तो इसके लिए हरा प्याज बेहद उपयोग साबित होगा। हरे प्याज का सेवन करने से शरीर में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा कम हो जाती है।

6. कीड़ा-मकौड़ा काट ले तो प्याज का रस लगाने से जलन और दर्द में राहत मितली है।
7. नाक से खून आने पर प्याज के रस की दो-तीन बूंदे डालने से खून आना बंद हो जाता है।
8. कच्चा प्याज खाने से गर्मियों में लू नहीं लगती है। अगर किसी को लू लग जाए तो प्याज का रस पीने या उसे तलवे पर मलने से राहत मलिती है।
9. जोड़ों में दर्द हो तो सरसों के तेल में प्याज का रस मिलाकर लगाने से फायदा हो सकता है।
10. प्याज त्वचा और बालों के लिए भी गुणकारी है। जैतून के तेल में प्यास का रस मिलाकर चेहरे पर लगाने से पिंपल्स यानी कि मुंहासों से राहत मलिती है। तथा प्याज समय से पहले होने वाली झुर्रियों को भी कम करता है।

(हालांकि ये सभी घरेलू उपचार हैं फिर भी डॉक्टर से परामर्श ले लेना बेहतर होगा)

युवाओं की शक्ति : ब्रम्हचर्य

लेखक : जितेन्द्र कुमार (योग प्रशिक्षक, समस्तीपुर)

मन तथा इन्द्रियों पर संयम करके वीर्य आदि शारीरिक शक्तियों की रक्षा करना, वेदादि सत्य शास्त्रों को पढ़ना तथा ईश्वर की उपासना करना ब्रम्हचर्य कहलाता है। वर्तमान समय में युवाओं की जनसंख्या बालक एवं वृद्धों की अपेक्षा अधिक है। परन्तु वे अशक्त वीर्यहीन एवं अजितेन्द्रिय है। इसका मूल कारण है ब्रम्हचर्य के नियमों का मनसा, वाचा एवं कर्मणा इन तीनों रूपों में पालन नहीं करना। इस कारण आज देश के युवाओं में अनैतिकता, व्यभिचार, काम, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, अभद्रता आदि जैसी भावनाओं का लक्षण दिखाई पड़ता है। उनमें नैतिक गुणों का ह्रास हो रहा है। उनमें विषयी आशक्त एवं ब्रम्हचर्य के अभाव के कारण शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक वृद्धि नहीं हो पा रही है। किसी विद्वान ने कहा है ''वीर भोग्या वसुन्धरा'' अर्थात् वीर्यवान एवं सामर्थ्यवान व्यक्ति ही संसार का उपभोग कर सकता है। जितेन्द्रिय एवं सयंमी पुरूष ही शासन करने में समर्थ हो सकता है। स्वामी विवेकानंद के शब्दों में जिसका शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक बल कमजोर है वह कोई भी कार्य करने में असमर्थ है। उन्होंने कहा है कि आज के युवाओं को रामायण एवं महाभारत की आवश्यकता नहीं बल्कि उन्हें शारीरिक एवं मानसिक बल बढ़ाने के लिए फुटबॉल मैदान की आवश्यकता है। हठ प्रदीपिका में कहा गया है कि बिन्दु (ब्रम्हचर्य) की सिद्धि होने के पश्चात् सब कार्य सिद्ध हो जाता है। योगसूत्र के अनुसार मन, वाणी एवं शरीर से संयम करके ब्रम्हचर्य का पालन करने वाले व्यक्ति का शरीरिक एवं बौद्धिक बल बढ़ता है। वेदों एवं उपनिषदों में भी ब्रम्हचर्य के महत्व का विषद् वर्णन प्राप्त होता है। कहा गया है कि देवताओं ने मृत्यु को ब्रम्हचर्य से ही जीता था तथा इन्द्र ब्रम्हचर्य के कारण ही देवराज पद को प्राप्त हुआ था। उपनिषदों में ब्रम्हचर्य को आत्मदर्शन के लिए आवश्यक माना गया है। कठोपनिषद् एवं छान्दोग्योपनिषद् में ब्रम्हचर्य के द्वारा ब्रम्हलोक की प्राप्ति बतलायी गयी है।

अत: निष्कर्ष रूप में युवाओं को अपने सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए ब्रम्हचर्य जीवन का पालन मनसा, वाचा एवं कर्मणा इन तीनों रूपों में करना परम आवश्क है। मनुष्य की उन्नति के लिए यह उत्कृष्ट तप है।

संस्कार वाणी : पहले से विद्यमान दुर्गणों को हटाकर उनकी जगह सद्गुणों का आधान करने को संस्कार कहते हैं। – डा. अर्चना प्रिय आर्य जी (अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)

ओजस्वी प्रवक्ता एवं मधुर गायिका

श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी

(अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)

की अमृतमयी वाणी में

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम कथा, भगवती सीता चरित

यज्ञ कथा, राष्ट्र कथा एवं आर्य भजनोपदेश

कराने के लिए सम्पर्क करें : 09719910557, 09719601088

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

संस्कार जागृति मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य जी के जन्मदिवस के अवसर पर वैदिक विधिविधान से ऊंचागांव में यज्ञ सम्पन्न करातीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

संस्कार जागृति मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य जी के जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित यज्ञ में भग लेते संस्कार जागृति मिशन के पदाधिकारीगण।

हाथरस जिला पंचायत अध्यक्ष डा.विनोद उपाध्याय जी के यहां बैठक में भाग लेते मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी।

ऊंचागांव आर्यसमाज के उपप्रधान रघुराज आर्य की नीतिनी का नामकरण संस्कार कराते मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां मीडिया की नजरों में

यूनिक समय
मथुरा, गुरुवार 10 सितंबर 2020

भारतीय संस्कृति के अनुसार ही मनाएं जन्मदिन

यूनिक समय, मथुरा। संस्कार जागृति मिशन के बैनर तले ग्राम उंचागांव में आयोजित यज्ञ में श्रद्धालुओं ने आहुति दी। मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य ने बच्चों के जन्मदिन भारतीय संस्कृति के अनुसार यज्ञ कर मनाने पर जोर दिया, जिससे आने वाली पीढ़ी हमारी संस्कृति, संस्कार व सभ्यता को जान सके। उन्होंने कहा कि बच्चों के जन्मदिन पर मोमबत्ती बुझाकर केक कटवाना हमारी परंपरा नही है। हमारी संस्कृति तो मोमबत्ती जलाने की है, न कि बुझाने की। हमें अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ना है, न कि प्रकाश से अंधकार की ओर। संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि आज मनुष्य इन तीनों को भूलकर विदेशी सभ्यता को अपना रहा है। हमें मिलकर फिर से वैदिक संस्कृति को स्थापित करना होगा, तभी हमारा भविष्य सुरक्षित होगा। कार्यक्रम में आर्य समाज के पूर्व प्रधान लखम सिंह आर्य, लखम सिंह आर्य, डॉ. कपिल प्रताप सिंह, विवेक प्रिय आर्य, विकास ओम आर्य, सत्यवती देवी आर्य, सरोज रानी आर्य तथा उत्कर्ष प्रताप सिंह आदि थे। सचिव विवेक प्रिय आर्य ने आभार जताया।

छोटी सी बात
10 सितंबर 2020

घरों में हावी होती जा रही है पाश्चात्य संस्कृति

मथुरा (छोटी सी बात)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा ऊंचागांव में यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं ने आहुति प्रदान की। इस अवसर पर मिशन की अध्यक्ष अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि बच्चों के जन्मदिन भारतीय संस्कृति के अनुसार यज्ञ कर मनाने चाहिए। जिससे आने वाली पीढ़ी हमारी संस ति, संस्कार व सभ्यता को जान सके। आज हमारे घरों में पश्चात संस्कृति हावी होती जा रही। उन्होंने कहा कि बच्चों के जन्मदिन पर मोमबत्ती बुझाकर केक काटवाना हमारी परंपरा नहीं है। हमारी संरु ति तो मोमबत्ती जलाने की है, न कि बुझाने की। हमें अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ना है, न कि प्रकाश से अंधकार की ओर। संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है तो उसे आहार, विचार और आचार इन तीनों को सद अर्थात अच्छा रखना होगा। उन्होंने कहा कि आज मनुष्य इन तीनों को भूलकर विदेशी सभ्यता को अपना रहा है। हमें मिलकर फिर से वैदिक संस ति को स्थापित करना होगा, तभी हमारा भविष्य सुरक्षित होगा। आर्य समाज के पूर्व प्रधान लखम सिंह आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारे ऋषियों की प्राचीन परम्परा है, इसमें युवाओं को आगे बढ़कर भाग लेना चाहिए। विकास ओम आर्य ने भी अपने विचार रखे। सचिव विवेक प्रिय आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से लखम सिंह आर्य, डॉ- कपिल

अमर भारती शुक्रवार, 11 सितम्बर 2020

भारतीय संस्कृति के अनुसार ही मनाएं जन्मदिन

संस्कार जागृति मिशन के पदाधिकारी यज्ञ करते हुए। फोटोः अमर भारती

अमर भारती संवाददाता

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन द्वारा ऊंचागांव में यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं ने आहुति प्रदान की। इस अवसर पर मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि बच्चों के जन्मदिन भारतीय संस्कृति के अनुसार यज्ञ कर मनाने चाहिए। जिससे आने वाली पीढ़ी हमारी संस्कृति, संस्कार व सभ्यता हमारी परंपरा नहीं है। आर्य समाज के पूर्व प्रधान लखम सिंह आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारे ऋषियों की प्राचीन परम्परा है, इसमें युवाओं को आगे बढ़कर भाग लेना चाहिए। विकास ओम आर्य ने भी अपने विचार रखे। सचिव विवेक प्रिय आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से लखम सिंह आर्य, डॉ. कपिल प्रताप

11 सितम्बर 2020 **राजपथ मथुरा**

जन्मदिन पर भारतीय संस्कृति के अनुसार यज्ञ करना सर्वोत्तमः अर्चना

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा ऊंचागांव में यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें श्रद्धालुओं ने आहुति प्रदान की। इस अवसर पर मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि बच्चों के जन्मदिन भारतीय संस्कृति के अनुसार यज्ञ कर मनाने चाहिए। जिससे आने वाली पीढ़ी हमारी संस्कृति, संस्कार व सभ्यता को जान सके। आज हमारे घरों में पश्चात संस्कृति हावी होती जा रही। उन्होंने कहा कि बच्चों के जन्मदिन पर मोमबत्ती बुझाकर केक काटवाना हमारी परंपरा नहीं है। हमारी संस्कृति तो मोमबत्ती जलाने की है, न कि बुझाने की। हमें अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ना है न कि प्रकाश से अंधकार की ओर। संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है तो उसे आहार, विचार और आचार इन तीनों को सद अर्थात अच्छा रखना होगा।

आर्य समाज के पूर्व प्रधान लखम सिंह आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारे ऋषियों की प्राचीन परम्परा है, इसमें युवाओं को आगे बढ़कर भाग लेना चाहिए। विकास ओम आर्य ने भी अपने विचार रखे। सचिव विवेक प्रिय आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से लखम सिंह आर्य, डॉ. कपिल प्रताप सिंह, विवेक प्रिय आर्य, विकास ओम आर्य, सत्यवती देवी आर्य, सरोज रानी आर्य, उत्कर्ष प्रताप सिंह आदि थे।

अमर उजाला आगरा | शुक्रवार, 11 सितंबर 2020

यज्ञ करके मनाएं बच्चों के जन्मदिनः डॉ. अर्चना

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन द्वारा बृहस्पतिवार को यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मिशन अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने बच्चों के जन्मदिन भारतीय संस्कृति के अनुसार यज्ञ कर मनाने की अपील की। उन्होंने कहा कि भावी पीढ़ी को हमारी संस्कृति, संस्कार की पहचान जरूरी है। संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि वैदिक संस्कृति की स्थापना से ही हमारा भविष्य सुरक्षित होगा। आर्य समाज के पूर्व प्रधान लखम सिंह आर्य, विकास ओम आर्य, सचिव विवेक प्रिय आर्य, डॉ. कपिल प्रताप सिंह, विकास ओम आर्य, सत्यवती देवी आर्य, सरोज रानी आर्य, उत्कर्ष प्रताप सिंह आदि शामिल हुए। संवाद

आज 11 सितम्बर 2020

भारतीय संस्कृति के अनुसार ही मनाएं जन्मदिन : डा. अर्चना प्रिय

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन द्वारा ऊंचागांव में यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं ने आहुति प्रदान की। इस अवसर पर मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि बच्चों के जन्मदिन भारतीय संस्कृति के अनुसार यज्ञ कर मनाने चाहिए। जिससे आने वाली पीढ़ी हमारी संस्कृति, संस्कार व सभ्यता को जान सके। आज हमारे घरों में पश्चात संस्कृति हावी होती जा रही। उन्होंने कहा कि बच्चों के जन्मदिन पर मोमबत्ती बुझाकर केक काटवाना हमारी परंपरा नहीं है। हमारी संस्कृति तो मोमबत्ती जलाने की है, न कि बुझाने की। हमें अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ना है, न कि प्रकाश से अंधकार की ओर। संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है तो उसे आहार, विचार और आचार इन तीनों को सद अर्थात अच्छा रखना होगा। उन्होंने कहा कि आज मनुष्य इन तीनों को भूलकर विदेशी सभ्यता को अपना रहा है। हमें मिलकर फिर से वैदिक संस्कृति को स्थापित करना होगा, तभी हमारा भविष्य सुरक्षित होगा। आर्य समाज के पूर्व प्रधान लखम सिंह आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारे ऋषियों की प्राचीन परम्परा है, इसमें युवाओं को आगे बढ़कर भाग लेना चाहिए। विकास ओम आर्य ने भी अपने विचार रखे। सचिव विवेक प्रिय आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से लखम सिंह आर्य, डॉ. कपिल प्रताप सिंह, विवेक प्रिय आर्य, विकास ओम आर्य, सत्यवती देवी आर्य, सरोज रानी आर्य, उत्कर्ष प्रताप सिंह आदि थे।

संस्कार जागृति मिशन

!! ओ३म् !!

''संस्कारात् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

संस्कार जागृति मिशन

एक कदम संस्कारों की ओर

'संस्कार जागृति मिशन' एक ऐसा प्रयास है जो भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

घरों में यज्ञ व बच्चों के संस्कार करायें

बच्चों के जन्मदिन, बुजर्गों की पुण्यतिथि व त्यौहारों पर अपने घरों पर दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म 'यज्ञ' करायें तथा अपने बच्चों के सभी संस्कार करा कर उन्हें संस्कारवान बनायें।

वैदिक रीति से संस्कार व यज्ञ करवाने के लिए सम्पर्क करें

सम्पर्क सूत्र : 09719910557, 09719601088, 09058860992, 08218692727

ई-मेल : sanskarjagratimission@gmail.com

SanskarJagratiMission

Sanskar Jagrati TV

धार्मिक खबर, भजन, प्रवचन, योग, संस्कार समागम तथा संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां देखने को YouTube पर संस्कार जागृति टीवी चेनल को सबस्क्राइब करें।